एण्ड टेक्नॉलॉजी के निदेशक) ने यूं दिया - कम कीमत के चश्मों की उपलब्धता एक चुनौती है लेकिन आज के समय को देखते हुए इसे सुलझाना संभव के दायरे में है। सबसे मुख्य बात है बेहतर गुणवत्ता का स्रोत पता करना यानी आई.एस.ओ. के मानकों के अनुरूप रेडीमेड चीज़ें और ज़रूरतमंदों तक पहुंचने का तंत्र।

सिल्वर एडॉप्टिव चश्मे एक नवाचारी विचार है लेकिन आज की स्थिति में यह बहुत महंगा है। और खास तौर पर बच्चों के मामले में उपयोगी नहीं है। शायद भविष्य में इस समस्या से पार पाया जा सके और इसकी कीमत कम होकर शायद 1 डॉलर तक पहुंच जाए। इस दौरान हमें तैयार माल का भंडारण करना चाहिए और अन्य नवाचारी निर्माण व्यवस्था विकसित करने के प्रयास करते रहने चाहिए। साथ ही आंख की देखभाल करने वालों को प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि ज़रूरतमंदों के लिए स्थानीय, किफायती और आसान सेवा उपलब्ध हो सके। यह वैश्विक पहल विज़न 2020 की कार्य योजना में शामिल है। दृष्टि के अधिकार ने इसे प्राथमिकता दी है और साल के अंत तक दृष्टि दोष पर काम कर रहा समूह आंख की देखभाल सम्बंधी अपनी रणनीति बना लेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

विज्ञान समाचार

क्लोन डॉली की मृत्यु

डॉली के जन्म पर जितना हो हल्ला मचा उसकी मौत पर उतनी ही चुप्पी रही। 14 फरवरी 2003, दोपहर के वक्त साढ़े छह साल की उम्र में डॉली चल बसी। चूंकि आम तौर पर भेड़ें इससे दुगनी उम्र तक जीती हैं इसलिए डॉली के मरने से क्लोन-जीवों के स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा सम्बंधी बहस को हवा मिलेगी।

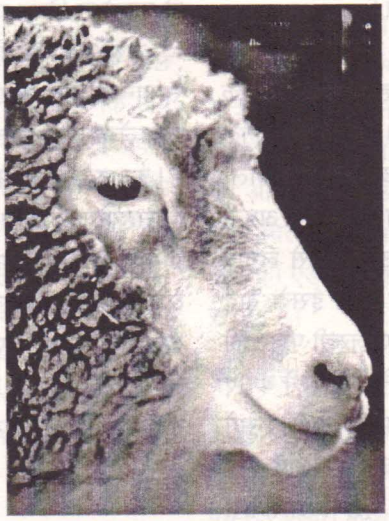

डॉली की मृत्यु फेफड़ों के जिस कैंसर से हुई वह बड़ी उम्र की भेड़ों में बहुत आम है। जनवरी 2002 में यह खबर छपी थी कि डॉली को समय से पहले ही जोड़ों का दर्द हो गया था। डॉली के पोस्टमार्टम के बाद उसे एडिनबरा में नेशनल म्यूज़ियम ऑफ स्कॉटलैण्ड को दे दिया जाएगा। यहां उसमें किसी मसाला भरकर उसे प्रदर्शन के लिए रखा जाएगा।

डॉली समेत कुछ अन्य क्लोन पर किए गए अध्ययन से पाया गया है कि उनकी उम्र के अन्य स्तनपाइयों से क्लोन के टीलोमियर छोटे होते हैं। गौरतलब है कि टीलोमियर गुणसूत्रों के सिरों की रक्षा करने वाले डी.एन.ए. के टुकड़े हैं और हर बार कोशिका विभाजन के समय ये और छोटे होते जाते हैं। टीलोमियर का छोटा होते जाना बुढ़ाती कोशिकाओं की निशानी है।

पर्याप्त जीवन जिए क्लोन पर हुए एकमात्र अध्ययन से पता चला है कि क्लोन चूहे समय से पहले ही मारे गए। टोक्यो, जापान के राष्ट्रीय संक्रामक रोग संस्थान ने यह अध्ययन किया। अन्य क्लोन सामान्य और स्वस्थ पाए गए। मसलन यू.एस. क्लोनिंग कम्पनी द्वारा एड्वांस्ड सेल टेक्नॉलॉजी से विकसित 24 बछड़े-क्लोन स्वस्थ हैं लेकिन कोई निष्कर्ष निकालने से पहले इन्हें अभी लम्बे जीना होगा। 2 फरवरी, 2003 को ऑस्ट्रेलिया की पहली क्लोन भेड़ अनपेक्षित रूप से मर गई। वह 2 साल 10 माह की थी। मृत्यु का कारण अज्ञात है। चूंकि उसका शरीर गलने लगा था इसलिए उसे तुरंत दफना दिया गया। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***